

डॉ. भीमराव अम्बेडकर एवं मान्यवर कांशीराम के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. दिनकर त्रिपाठी

एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

राजनीति विज्ञान विभाग, फीरोज़ गांधी कॉलेज, रायबरेली

अक्टूबर महीने में दो महान दलित नेता डॉ. भीमराव अम्बेडकर एवं मान्यवर कांशीराम को याद करते हैं। जहाँ एक ओर डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने 14 अक्टूबर, 1956 को नागपुर (महाराष्ट्र) के दीक्षा भूमि पर अपने लाखों साथियों के साथ बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया था। डॉ. अम्बेडकर के बौद्ध धर्म स्वीकारने के पाश्चात् 14 अक्टूबर से ही दलित उत्थान के लिए नया स्वरूप मिलता रहा है। इसी दिन से 22 सपनों को याद किया जाता है; जिसे डॉ. अम्बेडकर ने उस दिन उन्हें दिया था। वहीं दूसरी ओर मान्यवर कांशीराम ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर के द्वारा दिखाये गये अधूरे सपने को व्यावहारिक रूप देने तथा आगे ले जाने के प्रयास किया तथा बाद में 9 अक्टूबर, 2006 को ही निर्वाण प्राप्त किया।

निम्न से निम्नतर वर्ग अर्थात् महार जाति में 14 अप्रैल, 1891 को जन्म लेकर डॉ. भीमराव अम्बेडकर न केवल अस्पृश्यों के उद्धारक और मसीहा ही थे, अपितु अर्थशास्त्री, वकील, प्रोफेसर, राजनीतिज्ञ, संविधान निर्माता, क्रान्तिकारी और लेखक भी थे। प्रारम्भिक जीवन में डॉ. भीमराव अम्बेडकर को देश में जाति व्यवस्था के कारण कई बार क्रूरता के अनुभव हुए, जिसके कारण उनके मस्तिष्क में इस भावना ने अमिट छाप बना ली। डॉ. अम्बेडकर ने अपनी कृति 'एनीहिलेशन ऑफ द कास्ट' के अन्तर्गत हिंदू वर्ण व्यवस्था के निम्न वर्ग पर अन्यायों का विश्लेषण किया। डॉ. अम्बेडकर के विचार से अछूत ही अछूतों का नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं। उनके विचारों से शासन की संस्थाओं में दलित वर्गों के उचित और पर्याप्त प्रतिनिधित्व पर विशेष बल दिया जाय।

डॉ. अम्बेडकर के दृष्टिकोण नारी के प्रति बड़े ही उदारतापूर्ण थे। उनके विचार से सम्पूर्ण नारीवर्ग का सुधार ही संपूर्ण समाज का सुधार है, इसी से राष्ट्र का सुधार सम्भव है। डॉ. अम्बेडकर के अनेक सम्मेलनों का केन्द्र बिंदु नारी की स्थिति ही रही है, उन्होंने नारी वर्ग को जागृत करने का प्रयास किया। नारी की महत्ता के विषय में भगवान बुद्ध ने कहा था कि नारी संसार की महानतम विभूति है। क्योंकि नारी की अपरिहार्य महत्ता है। उसके द्वारा ही बोधतत्त्व तथा विश्व के अन्य शासक जन ग्रहण करते हैं। डॉ. अम्बेडकर सन् 1927 से 1956 तक नारी वर्ग को सभी स्तरों पर (जैसे कानूनी, सामाजिक, राजकीय) यथोचित स्थान दिलाने के लिए प्रयत्नशील रहे। इसके लिए मनुस्मृति में नारी के प्रति किये गये विधान का विरोध किया और हिंदू एक्ट (हिंदू विधान) बनाया। मनुस्मृति द्वारा नारी की स्वतंत्र सत्ता अथवा स्वतंत्र स्थिति की निरर्थकता को सार्थकता के रूप में साबित किया। बाद में डॉ. अम्बेडकर ने विधि विशेषज्ञ प्राचार्य धारपुरे एवं धनुशास्त्र पण्डित टी.आर. व्यंकट शास्त्री की मदद से हिंदू कोड बिल तैयार किया और हिंदू समाज में एक नयी चिंगारी कानूनी क्रांति के रूप में उत्पन्न की। डॉ. अम्बेडकर नारी शिक्षा के हिमायती थे। उनके अनुसार "स्त्रियों की प्रगति जितनी मात्रा में हुई होगी, इसी के आधार पर मैं उस समाज की प्रगति मानता हूँ। ज्ञान और विज्ञान केवल पुरुषों के लिए नहीं है। वह नारियों के लिए अत्यंत आवश्यक है। डॉ. अम्बेडकर ने भारतीय संविधान में अनुच्छेद 15 (1) के अंतर्गत लिंग के आधार पर किये जाने वाले भेद को समाप्त किया अर्थात् नारी को पुरुष के बराबर राजनैतिक अधिकार प्राप्त कराया एवं अनुच्छेद 14 द्वारा नारी को पुरुष के बराबर का दर्जा दिलाया और समान काम के लिए समान वेतन दिलाने की व्यवस्था की।

महादेव गोविन्द रानाडे और ज्योतिबा फुले आदि हिंदू समाज में क्रांतिकारी सुधार लाने की बात करते थे, किंतु वे हिंदू सामाजिक व्यवस्था को विपरीत विद्रोह की बिगुल फूँक न सके। वे निम्न वर्ग की मनःस्थिति की पीड़ा को समझ न सके।

इन टूटे दिलों के इंसानों की पीड़ा को डॉ. अम्बेडकर ने समझा और हिंदू धर्म के भीतर सर्वर्ण हिंदुओं एवं निम्न जातियों के बीच समानता का आंदोलन चलाया। महात्मा गाँधी का विचार था कि उच्च वर्ग के हिंदुओं का हृदय परिवर्तन करके अस्पृश्यता को समाप्त किया जा सकता है और उन्हें दृढ़ विश्वास था कि जल्दी ही ऐसा होगा, किंतु डॉ. अम्बेडकर इससे असहमत थे। गाँधी जी ने अस्पृश्य जाति के लिए 'हरिजन' (ईश्वर का भक्त) शब्द का प्रयोग सुझाया था। डॉ. अम्बेडकर ने इसका खण्डन करते हुए बताया कि जिस प्रकार टूटे-फूटे मकान की पुताई करके उसकी दुर्दशा को छिपा तो सकते हैं परंतु सुधार नहीं सकते। ऐसे में उस मकान को तोड़कर बनाना ज्यादा उपयुक्त होगा। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार ही अस्पृश्यता की जड़ें हिंदू वर्ण व्यवस्था में निहित हैं, अतः इस कुप्रथा को मिटाने के लिए वर्ण व्यवस्था का अंत जरूरी है। पं. जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में 'वे हिंदू समाज के अत्याचारपूर्ण तत्वों के प्रति विद्रोह के प्रतीक हैं।' डॉ. अम्बेडकर के मन पर महात्मा बुद्ध, अमरीकी दार्शनिक जॉन ड्यूई और महात्मा फुले का गहरा प्रभाव पड़ा था।

भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित डॉ. अम्बेडकर ने 31 मई, 1936 को बंबई सम्मेलन में बौद्ध धर्म ग्रहण करने का प्रस्ताव पारित कराया था। 20 वर्षों के पश्चात् आखिरकार डॉ. अम्बेडकर ने उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग के साथ भेदभाव को देखते हुए हिंदू धर्म से नाता तोड़ कर जीवन के अंतिम पड़ाव में बौद्ध धर्म को स्वीकार किया। बौद्ध धर्म नैतिकता पर आधारित था। महात्मा बुद्ध ने भी वर्ण व्यवस्था को कर्म के आधार पर माना था। डॉ. अम्बेडकर के लिए जे.एस. मिल. के शब्दों में 'आप अपनी आजादी किसी महान आदमी के भी कदमों में समर्पित नहीं करें' अर्थात् एक ऐसे महान व्यक्ति का आभारी होने में कोई बुराई नहीं है, जिसने अपनी पूरी जिंदगी देश की सेवा में समर्पित कर दी है। अंत में डॉ. अम्बेडकर के लिए महात्मा गाँधी ने कहा था कि 'डॉ. अम्बेडकर के नाम के साथ चाहे किसी भी विश्लेषण का प्रयोग हो. वे एक ऐसे व्यक्ति थे, जिनको भुलाया नहीं जा सकता।'।

मान्यवर कांशीराम का जन्म पंजाब के रोपड़ जिले के ख्वासपुर गाँव में 14 अप्रैल, 1934 को हुआ। वे राम दसिया जाति (हरिजन से सिख बने) परिवार में जन्मे थे। कांशीराम खुद एक शिक्षित व्यक्ति थे और पूणे (महाराष्ट्र) में एक वैज्ञानिक (1957) के रूप में तैनात थे। मान्यवर कांशीराम ने दलितों के पढ़े-लिखे नौकरीपेशा लोगों को प्रेरित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। मान्यवर कांशीराम ने 06 दिसम्बर, 1978 को डॉ. अम्बेडकर के अधूरे मिशन को पूरा करने के लिए बामसेफ (बैकवर्ड एण्ड माइनोरिटी कम्युनिटीज इम्प्लाइज फंडेशन) की स्थापना की। मान्यवर कांशीराम ने कहा है कि— 'मैं कभी शादी नहीं करूँगा। मैं कोई सम्पत्ति नहीं लूँगा। मैं कभी अपने घर नहीं जाऊँगा। मैं अपना बाकी का जीवन ज्योतिबा फुले और डॉ. अम्बेडकर के आंदोलन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए समर्पित कर दूँगा।' मान्यवर कांशीराम के नेतृत्व से संबंधित सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिंदु यह था कि उन्होंने सबसे पहले दलितों के शिक्षित वर्ग को संगठित करने का काम किया। शायद मान्यवर कांशीराम डॉ. अम्बेडकर के इस बात को विशेष ध्यान रखे कि दलितों का शिक्षित वर्ग उनके साथ जुड़ नहीं सका था। जल्द ही मान्यवर कांशीराम को इस बात का अहसास हो गया। मान्यवर कांशीराम का बामसेफ 1980 तक अल्पसंख्यक, पिछड़े और दलित समुदाय के कर्मचारियों का विशाल संघ बन चुका था। मान्यवर कांशीराम ने इस वर्ग को 'समाज का ऋण चुकाओ' नारा देकर संगठित किया। समय बीतने के साथ बामसेफ से 06 दिसम्बर, 1981 को डी.एस-4 (दलित शोषित समाज संघर्ष समिति) का जन्म हुआ। डी. एस-4 ने हरियाणा में सन् 1982 के विधान सभा चुनाव में अपने प्रत्याशी खड़े किये और चुनाव में 57,588 (1.19%) वोट मिले। यह एक प्रयोग था, जिसमें मान्यवर कांशीराम सफल हुए। मान्यवर कांशीराम की पुस्तक 'द चमचा एज' का प्रकाशन 24 सितम्बर, 1982 को हुआ। यह पूना पैक्ट (1932) के 50 वर्ष पूरे होने पर 24 सितम्बर, 1982 से राजनीति अभियान की शुरुआत की। इस वर्ष देशों के सभी कोनों से पूना पैक्ट से संबंधित धिक्कार रैली निकाली गयी। जो पूना में पहुँचकर समाप्त हुई। दो साल बाद 14 अप्रैल, 1984 को बाकायदा एक राजनीतिक पार्टी ब.स.पा. (बहुजन समाज पार्टी) बनाया।

मान्यवर कांशीराम ने 1988 में ब.स.पा. की तरफ से आर्थिक मुक्ति एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए बड़े स्तर पर आंदोलन चलाए। जिसमें मजदूर आंदोलन, सफाई मजदूर आंदोलन, किसान आंदोलन, स्वाभिमान आंदोलन एवं भागीदारी आंदोलन प्रमुख रूप से थे। भागीदारी आंदोलन में मान्यवर कांशीराम ने नारा दिया— 'वोट हमारा, राज तुम्हारा नहीं चलेगा, नहीं चलेगा।' मान्यवर कांशीराम के राजनीतिक आंदोलन तीन प्रमुख सिद्धांतों पर विकसित थे, जिसमें पहला जातीय सम्मान, दूसरा भागीदारी और तीसरा वोट को लूटने और बिकने से बचाना। मान्यवर कांशीराम ने आबादी के अनुपात से बहुजन समाज की भागीदारी की माँग की। मान्यवर कांशीराम के अनुसार 'जिसकी जितनी संख्या भारी उतनी उसकी भागीदारी' होना चाहिए। पिछड़ी जाति के लिए मण्डल आयोग की सिफारिश को लागू करने की माँग भी की थी और रैलियाँ भी निकाली थीं, मण्डल आयोग की सिफारिश को लागू करने का निर्णय देशभर में प्रदर्शनों, हिंसक घटनाओं और आंदोलनों का कारण बन गया। इस आंदोलन में आत्मदाह व आत्महत्या जनमानस के लिए कष्टदायक थीं। आरक्षण का मामला सर्वोच्च न्यायालय के माध्यम से निर्णित हुआ। किंतु इसका संपूर्ण श्रेय विश्वनाथ प्रताप सिंह (1990) को प्राप्त हुआ।

आज दलित समुदाय के लाखों लोग दलित आंदोलन में अपनी उत्कृष्ट भूमिका अदा कर रहे हैं। इसका सारा श्रेय मान्यवर कांशीराम को जाता है। 1984 में जन्मी वी.एस.पी. को आपने कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया।

मान्यवर कांशीराम भारत में बौद्ध धर्म को पुनर्जीवित करने के डॉ. अम्बेडकर के अधूरे मिशन को आगे बढ़ाना चाहते थे। जिसे बेहतर ढंग से प्रयास किया था। पूणे में एक वैज्ञानिक के रूप में समाजसेवी, राजनीतिज्ञ एवं महान दलित नेता के माध्यम से निम्न वर्ग को आगे बढ़ाने के लिये निरंतर संघर्ष किये। मान्यवर कांशीराम ने डॉ. अम्बेडकर के अधूरे कारवाँ को बी.एस.पी. के माध्यम से आगे तक ले जाने तथा इसे एक हद तक व्यावहारिक आकार देने का प्रयास किया।

निःसंदेह डॉ. अम्बेडकर एवं मान्यवर कांशीराम दोनों ने दलितों के भीतर आत्म गौरव का भाव भरा। दोनों महान नेता दूरदर्शी लोकतांत्रिक भी थे। दोनों विचार, जाति और धर्म से सम्बन्धित सभी भारतीयों को विवेकशील एवं ज्ञान संपन्न बनाने में अथक परिश्रम किया है।

सन्दर्भ

1. डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, लेखन और भाषण मून वसंत। वॉल्यूम. III, बॉम्बे 1979।
2. आधुनिक भारत में दलित— दृष्टि और मूल्य, द्वितीय संस्करण, एस.एम. द्वारा संपादित। माइकल. सेज प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. डॉ. बी.आर. अम्बेडकर — उनका जीवन और कार्य, एम.एल. सहारे, राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली 1987।
4. आधुनिक भारत का दलित आन्दोलन, आर. चन्द्रा, कन्हैया लाल चंचरीक
5. कास्ट इन इण्डियन पालिटिक्स, प्रो. रजनी कोठारी, नई दिल्ली 1973
6. हिंदू नारी का उत्थान और पतन — डॉ. अम्बेडकर
7. डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर रांची आयोग — खण्ड 1 एवं खण्ड 2 सं.मा.फ. गाजरे
8. डॉ. अम्बेडकर लाईफ एण्ड मिशन — धनंजय कीर, पापुलर प्रकाशन बंबई, तृतीय संस्करण 1987.
9. कांशीराम के दो चेहरे — कवल भारती
10. डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, राइटिंग एण्ड स्पीचेज, महाराष्ट्र सरकार 1987
11. बाबा साहेब अम्बेडकर संपूर्ण वाङ्मय भाग 1, भारत सरकार, नई दिल्ली

12. डॉ. अम्बेडकर के आर्थिक विचार और नीतियाँ, डॉ. विष्णुदत्त नागर, डॉ. कृष्णाबल्लभ नागर, म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी 1995
13. रिजर्वेशन पॉलिसी एण्ड प्रैक्टिस इन इण्डिया, ए मीन्स टू इन एण्ड, अनिरुद्ध प्रसाद, 1991,
14. दलित राजनीति की समस्या, राज किशोर
15. रिजर्वेशन पॉलिसी एण्ड प्रैक्टिस इन इण्डिया ए मीन्स टू इन एण्ड, सी. रूपा, नई दिल्ली 1992.
16. जनसत्ता (दैनिक समाचार पत्र 20 दिसम्बर, 2009)
17. द हिंदू (दैनिक समाचार पत्र 06 दिसम्बर, 1995)
18. राष्ट्रीय सहारा (दैनिक समाचार पत्र 24 अप्रैल, 1994)
19. स्वतंत्र भारत (दैनिक समाचार पत्र 20 फरवरी, 1994)
20. हिंदुस्तान (दैनिक समाचार पत्र 14 अप्रैल, 2006) मैंने हिंदू धर्म क्यों छोड़ा? लेखक कुमार मोदी
21. डॉ. भीमराव अम्बेडकर हिज लाइफ एण्ड वर्क, एम.एल. सहारे, नेशनल कौउन्सिल आफ एजुकेशन रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग, नई दिल्ली, 1987
22. डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जाति संबंधी विचार—लेखक डॉ. दिनकर त्रिपाठी, पत्रिका अम्बेडकर के विचार : समरस समाज, कुशीनगर वर्ष 2008–09
23. सामाजिक क्रांति, संपादक शंभू नाथ के दस्तावेज, वाणी प्रकाशन, भाग-2, नया दिल्ली
24. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक विचार अम्बेडकर अवस्थी एवं डॉ. रामकुमार अवस्थी